

Brief Biodata of Dr. Vinod Kumar

डॉ. विनोद कुमार आईसीएआर-राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र, मुजफ्फरपुर, बिहार में प्रधान वैज्ञानिक (पादप रोग विज्ञान) के रूप में 2018 से कार्यरत हैं। वह 2003 में कृषि अनुसंधान सेवा (ए.आर.एस.) में शामिल हुए थे। शुरुआती 7 वर्षों के दौरान उन्होंने मूँगफली के रोगों और माइकोटॉक्सिन पर राष्ट्रीय मूँगफली अनुसंधान केंद्र, जूनागढ़, गुजरात में काम किया था। 2009 में इस केंद्र पर स्थानांतरण पश्चात उन्होंने लीची पर काम करना शुरू किया। उनकी विशेषज्ञता का क्षेत्र मूँगफली के रोगों, माइकोटॉक्सिन, लीची के रोगों और पादप रोगों के जैवनियंत्रण द्वारा प्रबंधन पर रहा है। उनकी उपलब्धियों और पादप रोग विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें 'फेलो ऑफ इंडियन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसाइटी (एफपीएसआई)', नई दिल्ली, युवा वैज्ञानिक पुरस्कार और विभिन्न पेशेवर सोसाइटी द्वारा उत्कृष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वर्तमान में, वह लीची में फसल-कटाई से पहले और फ़ासलोपरांत रोगों के प्रबंधन, लीची पादप स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए सूक्ष्मजीवों का प्रयोग, 'एथनोमेडिसिनल प्लांट इन्फ्यूजन' द्वारा वैकल्पिक प्रबंधन रणनीति, सूक्ष्मजीवों के माध्यम से लीची की शेल्फ-लाइफ में वृद्धि जैसी अनुसंधान परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं।

Dr. Vinod Kumar is working as Principal Scientist (Plant Pathology) at ICAR-National Research Centre on Litchi, Muzaffarpur, Bihar since 2018. He had joined the Agricultural Research Service (ARS) in 2003. During the initial 7 years, he worked on groundnut diseases and mycotoxins at the National Groundnut Research Centre, Junagadh, Gujarat. After transfer to this Centre in 2009, he started working on Litchi. His area of expertise has been on management of groundnut diseases, mycotoxins, litchi diseases and biocontrol of plant diseases. He has been awarded 'Fellow of Indian Phytopathological Society (FPSI)', New Delhi, Young Scientist Award and Outstanding Scientist Award from various professional societies for his achievement and furtherance of science. Currently, he is working on research projects focusing on management of pre- and post-harvest diseases in litchi, use of microbes for litchi plant health management, alternative disease management strategies through use of 'ethnomedicinal plant infusions', and enhancement of shelf-life of litchi through fructoplane microbes.